Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 08, Issue 01, December, 2020
www.swarsindhu.pratibha-spandan.org
DOI: 10.33913/ss.v08i01a09
UGC CARE listed Journal

मध्यकालीन ग्रंथों में तालों का स्वरूप

Dr. Manisha Nigam

Department of Music, Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur, Uttar Pradesh

सार संक्षेपिका

वेद, उपनिषद्, पुराण, महाकाव्य आदि ग्रन्थों में जीवन के समस्त पक्षों के अन्तर्गत संगीत का भी समावेश है। भारतीय संगीत शास्त्र में ताल का प्रारम्भ कब हुआ इस पर सप्रमाण कुछ भी कहना संभव नहीं है। नाट्यशास्त्र में तालों व ताल सम्बन्धी तत्वों का विशद विवेचन हुआ है। यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि नाट्यशास्त्र से पूर्व भी ताल–शास्त्र विकसित था। मध्यकाल में सृजित देशी संगीत और संगीत पद्धति का प्रतिपादन करने वाले पं. शारंगदेव को देशी संगीत का सूत्रधार माना है। पं. शारंगदेव ने प्राचीन ग्रंथों का गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया। साथ ही सम्पूर्ण देश का भ्रमण कर संगीत मनीषियों से सांगीतिक विधि विधान की चर्चा की साथ ही संगीत कला के विकास क्रम को ध्यान में रखते हुये नवीन गान शैलियों, स्वरलिपि पद्धति और तालिपि पद्धति का प्रादुर्भाव भी किया। मध्यकालीन ग्रंथों के अधिकांश लेखकों ने संगीत रत्नाकार में तालों का स्वरूप को ही अपने ग्रथों में अपनाया है।

बीज शब्द

मध्यकालीन ग्रंथ, ताल, देशी संगीत।

ABSTRACT

Vedas, Upanishads, Puranas etc. include music under all aspects of life. It is not possible to say anything on when the rhythm of Indian music began. In the Natyashastra, a detailed discussion of the rhythms and elements related to the rhythm has been done. It can be said with no doubt that even before Natyashastra, rhythmology was developed. Pt. Sharangadeva, who composed the indigenous music and music system created in the medieval period, is considered as the master of native music. Pt. Sharangadev studied ancient texts seriously. Along with touring the entire country, discussed the musical method legislation with the music personalities, as well as keeping in view the developmental order of the musical arts, he also introduced the new song styles, vocal format and the rhythm method. Most writers of medieval texts have adopted the form of rhythms in the music ratnacar in their texts.

Keywords

Medieval texts, rhythms, indigenous music.

भूमिका

वैदिक काल से लेकर मध्य काल तक के समय में उल्लेखित ग्रन्थ– नाट्यशास्त्र, दत्तिलम, बृहद्देशी, भरतभाष्य, संगीतार्णव, संगीत, पारिजात, नारदीय शिक्षा, संगीत रत्नाकर ग्रन्थों में संगीत के शास्त्रात्मक गुणों नियामों के वर्णन के साथ ताल का सुस्पष्ट विवरण प्राप्त होता है। मध्यकालीन ग्रन्थ संगीत रत्नाकर के अतिरिक्त संगीत चूड़ामणि, संगीत मकरंद, संगीतोपनिषद्सारोद्धार, संगीत पारिजात, विरूपाक्ष कृत ताल चंद्रिका चुतुर्दडी प्रकाशिका, रसकौमुदी, संगीत दामोदर आदि ग्रंथों में भी ताल का स्पष्ट विवरण प्राप्त होता है।

आचार्य शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर :संगीत रत्नाकर का पाँचवा अध्याय ताल विषयक है। इस ग्रंथ के लेखक आचार्य शारंगदेव ने तालाध्याय का आरम्भ श्लोक के द्वारा किया है –

तालस्तल प्रतिष्ठायामिति धातोर्घञि स्मृतः ।
गीतं वाद्यं तथा नृत्यं यतस्ताले प्रतिष्ठितम्।।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 08, Issue 01, December, 2020
www.swarsindhu.pratibha-spandan.org
DOI: 10.33913/ss.v08i01a09
UGC CARE listed Journal

तात्पर्य यह है कि स्थिरता से स्थापित होने वाले तल् धातु में प्रत्यय लगाकर ताल शब्द की व्युत्पत्ति हुई है। गायन, वादन तथा नृत्य को ताल से ही स्थिरता प्राप्त होती है। शारंगदेव ने संगीत रत्नाकर में कुल 120 तालों का विवरण दिया है। संगीत रत्नाकर में उस समय के सभी तालों का वर्णन नहीं हुआ है, क्योंकि उनकी संख्या कहीं ज्यादा है।

शारंगदेव ने द्रुत 0, लघु 1, गुरू ऽ और प्लुत ऽ तथाविरामचिन्हों की रचना करके तालों को एक वैज्ञानिक दृष्टिकोंण देने का भी प्रयास किया। इनमें द्रुत 1/2 मात्रा, लघु 1 मात्रा, गुरू 2 तथा प्लुत 3 मात्राओं के थे। रत्नाकर के अनुसार – लघु, गुरू प्लुत आदि इकाइयों के माँप से सशब्द, निशब्द क्रियाओं द्वारा मापा गया वह समय जो गीत, वाद्य नृत्य आदि को विशेष रूप से धारण करता है ताल कहलाता है।

संगीत रत्नाकर के प्रबन्ध अध्याय में प्रबन्धों हेतु तालों के जो प्रयोग उपलब्ध हैं उनसे तत्कालीन तालों के प्रयोगिक पक्ष का आंशिक अध्ययन ही संभव है। उस काल में अलग–अलग विषयों पर आधारित अलग–अलग प्रबन्ध गान के लिए अलग–अलग प्रकार के ताल निर्धारित थे। जैसे–संगीत रत्नाकर में शुद्ध सूड़ के आठ प्रबन्ध हैं जिन्हे सिंह भूपाल ने मार्ग सूड़ कहा है। जिनके नाम हैं एला, करण, ढेंकी, वर्त्तनी, झम्बड़, लस्तुक, रासक एवं एकताली है। रत्नाकर में इन प्रबन्धों के साथ बजने वाले तालों का भी वर्णन हैं। जैसे– एला प्रबन्ध जिसके गीत त्याग, सौभाग्य, शौर्य, धैर्य आदि विषयों पर आधारित होते थे इन प्रबन्ध के साथ मण्ठ, द्वितीय, कंकाल एवं प्रतिपाल जैसे–तालों का वादन होता था। संगीत रत्नाकर में कुल 120 तालों का विवरण इस प्रकार है :–

क्रम	ताल का नाम	मात्रा
1	आदिताल	1 मात्रा
2	द्वितीयक	2
3	तृतीयक	1/1/3
4	चतुर्थक	2/1/2
5	पंचम	1
6	निश्शंकलील–ताले	11
7	दर्पण	3
8	सिंह विक्रम	16
9	रतिलील	6
10	सिंह लील	2/1/2
11	कंदर्प	6
12	वीरविक्रम	4
13	रंगताल	4

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 08, Issue 01, December, 2020
www.swarsindhu.pratibha-spandan.org
DOI: 10.33913/ss.v08i01a09
UGC CARE listed Journal

क्रम	ताल का नाम	मात्रा
14	श्रीरंग	8
15	चच्चरी	10 मात्रा
16	प्रत्यंग	10 मात्रा
17	यतिलग्न	1/1/2
18	गजलील	4/1/2
19	हंसलील	2/1/2
20	वर्णभिन्न	4
21	विभिन्न	6
22	राजचूड़ामणि	8
23	रंगद्योत	9
24	रंगप्रदीपक	10
25	राजताल	11
26	वर्णताल–	5
27	सिंहविक्रीड़ित	21
28	जयताल	9
29	वनमाली	6
30	हंसनाद	8
31	सिंहनाद	8
32	कुटुक्क	4
33	तुरंगलील	1
34	शरभलील	6
35	सिंहनंदन	20
36	त्रिभंगी	6
37	रंगाभरण	9
38	मंठ	6
39	कोकिलप्रिय	6
40	निस्सारूक	2/1/2
41	राजविद्याधर	4
42	जय मंगल	8
43	मल्लिकामोद	4

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 08, Issue 01, December, 2020
www.swarsindhu.pratibha-spandan.org
DOI: 10.33913/ss.v08i01a09
UGC CARE listed Journal

क्रम	ताल का नाम	मात्रा
44	विजयानंद	8
45	क्रीड़ा ताल	6
46	जयश्री	8
47	मकरंद	4
48	कीर्त्ति ताल	पौने आठ
49	श्री कीर्त्ति	6
50	प्रतिताल	3
51	विजय	9
52	बिन्दुमाली	6
53	नन्दन	5
54	मण्ठिका	साढे तीन
55	दीपक	7
56	उदीक्षण	4
57	ढ़ेंकी	5
58	विषम	साढे चार
59	वर्ण मंठिका	5
60	अभिन्नद	5
61	अनंग	8
62	नान्दी	8
63	मल्लताल	सवा पाँच
64	कंकाल	5
65	कुन्दक	6
66	एकताली	आधा
67	कुमुद	6
68	चतुष्ताल	डेढ़
69	दोम्बुल	डेढ़
70	अभंग	4
71	रायवंकोल	6
72	वसंत	9
73	लघु शेखर	1

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 08, Issue 01, December, 2020
www.swarsindhu.pratibha-spandan.org
DOI: 10.33913/ss.v08i01a09
UGC CARE listed Journal

क्रम	ताल का नाम	मात्रा
74	प्रताप शेखर	2
75	झंपाताल	ढाई
76	गजझम्पा	सवा पाँच
77	चतुर्मुख	7
78	मदन	3
79	प्रतिमण्ठक	8
80	पार्वती लोचन	10
81	रति	3
82	लीला	साढे चार
83	करणायति	2
84	ललित	4
85	गारूगी	सवा दो
86	राजनारायण	7
87	लक्ष्मीश	सवा पाँच
88	ललितप्रिय	7
89	श्रीनंदन	7
90	जनक	12
91	बर्धन	5
92	रागवर्धन	पौने पाँच
93	षटताल	3
94	अंतक्रीड़ा	पौने दो
95	हंस ताल	सवा दो
96	उत्सव	4
97	विलोकित	6
98	गजताल	4
99	वर्णयति	3
100	सिंहताल	साढे चार
101	करूण	2
102	सारस	साढे चार
103	चण्डताल	साढे तीन

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 08, Issue 01, December, 2020
www.swarsindhu.pratibha-spandan.org
DOI: 10.33913/ss.v08i01a09
UGC CARE listed Journal

क्रम	ताल का नाम	मात्रा
104	चन्द्रकला	16
105	लयताल	साढे अट्ठारह
106	स्कंद ताल	10
107	अड्डताली	अढाई
108	धत्ता	6
109	द्वन्द्व	12
110	मुकुन्द	5
111	कुविन्दक	7
112	कलध्वनि	8
113	गौरी	5
114	सरस्वतीकण्ठाभरणा	7
115	भग्नताल	सवा पाँच
116	राजमृगांग	4
117	राजमार्तण्ड	साढे तीन
118	मिश्र वर्ण	13/1/2
119	निश्शंक	11
120	शारंगदेव ताल	11

संगीत चूड़ामणि : संगीत चूड़ामणि नामक ग्रंथ में तालों के 4 लक्षण लिए गये हैं। इसमें लिखित लगभग सभी ताल रत्नाकर में हैं। कुछ तालों के नाम वे ही हैं, लेकिन स्वरूप में कुछ अन्तर है। इसमें कुल 101 तालों का उल्लेख है और 96 का विवरण है। इसमें ताल लक्षणों के देवता भी बताये हैं। जैसे– द्रुत के शंभु, लघु की गौरी, गुरू के शिव और गौरी दोनों तथा प्लुत के ब्रह्मा, विष्णु और महेश।

नारद कृत संगीत मकरंद :103 तालों का वर्णन है, किन्तु मार्गी और देशी तालों का वर्गीकरण नहीं है। नारद ने ताल के दस प्राणों का उल्लेख किया है। त्रयश्र कलाओं के लिए इस ग्रंथ में 6, 12, 24, 48, व 96 तथा चतुरश्र, कलाओं के लिए 4, 8, 16, 32, 62 और 128 का उल्लेख है। संगीत मकरंद में ध्वनि के आधार पर संगीत का वर्गीकरण करते हुए लेखक ने नखज़, वायुज, चर्मज, लौहज और शरीरज नाम दिया है। इनमें से चर्मज और लौहज श्रेणी के वाद्य लय और ताल कें व्यवहार हेतु पुयुक्त होते थे। संगीत मकरंद में लय और ताल को अधिक महत्व मिला है।

संगीतोपनिषद्सारोद्धार :जैन आचार्य सुधा कलश द्वारा लिखित इस ग्रंथ में ताल विहीन गायन, वादन और नृत्य को निरर्थक करार देते हुये इसमें ताल के विभिन्न अवयवों का वर्णन किया गया

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 08, Issue 01, December, 2020
www.swarsindhu.pratibha-spandan.org
DOI: 10.33913/ss.v08i01a09
UGC CARE listed Journal

है। इसमें द्रुत, लघु, गुरू, प्लुत, कला, प्रस्तार, विराम, कालमान तथा मात्रा आदि का वर्णन हुआ है। इस ग्रंथ के तालाध्याय में 1 मात्रा से 10 मात्रा वर्गों में 74 तालों के लक्षण दिए गये हैं। इनमें से केवल एक पूर्णचंद्र ताल 30 मात्राओं का है तो दूसरा पृथ्वी कुंडली ताल 60 मात्राओं का है। इन दो तालों को छोड़कर शेष सभी ताल संगीत रत्नाकर में हैं परन्तु लक्षण में कुछ भिन्नता है।

यह ऐसा प्रथम ग्रंथ है जिसमें लक्षण के साथ–साथ तालों के पटाक्षर अथवा ठेके भी दिए गये हैं :–

जैसे – 4 मात्रा का आदि ताल

त द्धि थउ द्रे
| | | |

इसी प्रकार 8 मात्रों का श्रीरंग ताल भी है जिसका लक्षण । । ऽ । Ś लघु, लघु, गुरू, लघु और प्लुत है।

धिगि ऽ तकि थुंगि ऽ दिगि थगुतक्विता ततत तककुटिधिटेटें
| | ऽ | Ś

रस कौमुदी :मध्य युग का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें ताल के दस लक्षणों का निरूपण हुआ है। इसमें काल के क्षण से प्लुत तक के अवयवों के मानों का, मार्ग में ध्रुव आदि 4 मार्गों का, क्रिया में सशब्द और निःशब्द क्रियाओं का, अंग में द्रुत, गुरू आदि अवयवों का, ग्रह में अतीत, अनागत आदि ग्रहों का तथा जाति में चतुरश्र और त्र्यश्र आदि जातियों का, यति में स्रोतागता आदि और अंत में प्रस्तार का निरूपण है। प्राप्त ग्रंथ में कला और लय वाला अंश नहीं मिलता है।

शुभंकर कृत संगीत दामोदर का रचना काल पंद्रहवीं शताब्दी माना गया है। तालों के वर्गीकरण हेतु शुभंकर ने भी द्रुत, लघु, गुरू एवं प्लुत मात्राओं का ही आधार लिया है। इसमें वर्णित 101 तालों की उपलब्ध सूची में से मात्र 60 तालों के ही विवरण दिए गए हैं।

आनन्द संजीवनी : नामक पुस्तक में गुरू और प्लुत का माप लघु में न देकर द्रुत के द्वारा इस प्रकार किया गया है –4 द्रुत से 1 गुरू और 6 द्रुत से एक प्लुत होता है। द्रुत का माप आधी कला कहा गया है।

भावभट्ट : कृत अनूप संगीत रत्नाकर, अनूप संगीत विलास एवं अनूप संगीतांकुश इन तीनों ग्रंथों में ताल संबंधी ढेरों विवरण रत्नाकर से ही लिए गए हैं। ताल के लघु, गुरू का मान ठीक उसी रूप में दिया गया है जिस रूप में संगीत समयसार में क्षण, काष्ठा, लव आदि के द्वारा दिए गए हैं। इससे प्रतीत होता है कि ताल के दस प्राण की धारणा काफी पहले से चली आ रही होगी।

व्यंकटमुखी कृत चुतुर्दंडी प्रकाशिका : सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में ताल स्वरूपों में एक बड़ा मोड़ आया जिससे दक्षिण भारतीय ताल पद्धति का जन्म हुआ। इसका निरूपण सबसे पहले चतुर्दंडी

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 08, Issue 01, December, 2020
www.swarsindhu.pratibha-spandan.org
DOI: 10.33913/ss.v08i01a09
UGC CARE listed Journal

प्रकाशिका और संगीत पारिजात जैसे ग्रंथों में ही मिलता है। चतुर्दंडी प्रकाशिका में अलंकारों का निरूपण करते हुए 8 प्रकार के अलंकार बताए गए हैं जो तालों के स्वरूप को स्पष्ट करने वाले स्वर समूह हैं। ये जिन तालों में निबद्ध हैं, उनके नाम हैं–झोंपट, ध्रुव, मठ्य या मंठ, रूपक, झम्पा, त्रिपुट, अठ या अड्ड तथा एकताल या एकताली।

इनमें ध्रुव, मंठ, अठ और एकताल नाम सालगसूड़ों से लिए गए हैं। इनमें से एक झोंपट को छोड़कर शेष सभी ताल आज भी कर्नाटकीय संगीत में प्रचलित हैं। इन सातों तालों का रूप भी लगभग वैसा ही है जैसा चतुर्दंडी प्रकाशिका में वर्णित है। इस ग्रंथ में विभिन्न रसों के निर्माण में विभिन्न तालों को सहायक बताया गया है।

संगीत नारायण : ग्रंथ में सशब्द आदि क्रियाओं का रूप प्राचीन से भिन्न है। लघु के साथ गुरू और प्लुत के अनुपात को बताते हुए लघु में एक घात अर्थात् सशब्द क्रिया की, गुरू में एक घार और एक निशब्द की तथा प्लुत में एक घात और दो निशब्द क्रिया बताया गया है। जिसका अर्थ यह है कि निशब्द क्रिया सशब्द क्रिया के विस्तार के रूप में प्रयुक्त होती है। उसका स्वतंत्र स्वरूप नहीं है।

सालगसूड़ों में प्रयुक्त होने वाले आदि, यति, निस्सारू, अड्ड, त्रिपुट, रूपक, झम्प, मठ और एकताली इन नौ तालों के लक्षण और गीतों के उदाहरण भी हैं। आजकल उड़िया संगीत में जो ताल प्रचलित हैं, उनके नाम वे ही हैं जो संगीत नारायण में हैं।

संगीत पारिजात : के ताल अध्याय में कुछ ऐसी जानकारियां दी गई हैं जो अन्य समकालीन ग्रंथों में नहीं हैं। काल को इनमें अन्य सभी ग्रंथों से अलग व्यापक रूप में देखा गया है। इसमें सौ कमल पत्रों के छेदन का काल एक क्षण बताने के बाद –

8 क्षण = 1 लव,	8 लब = 1 काष्ठा,	8 काष्ठा = 1 निमेष,	8 निमेष = 1 कला
2 कला = 1 त्रुटि,	2 त्रुटि = 1 अणु,	2 अणु = 1 द्रुत,	2 द्रुत = 1 लघु,
2 लघु = 1 गुरू,	3 लघु = 1 प्लुत,	10 प्लुत = 1 पल,	60 पल = 1 घटिका
60 घटिका = 1 दिन,	30 दिन = 1 मास,	12 माह = 1 वर्ष	(शरत् भी कहा जाता है)

इसके पूर्व के ग्रंथों में दिए विवरण से काल का निश्चित माप जान पाना संभव नहीं था। लेकिन, संगीत पारिजात के माध्यम से एक सीमा तक यह संभव हुआ क्योंकि पारिजात के अनुसार लघु एक दिन का एक लाख आठ हजारवां भाग है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 08, Issue 01, December, 2020
www.swarsindhu.pratibha-spandan.org
DOI: 10.33913/ss.v08i01a09
UGC CARE listed Journal

संगीत पारिजात में देशी वर्ग के तकरीबन 165 तालों के नाम उल्लिखित हैं जिनमें से 158 के लक्षण भी हैं, यद्यपि कुछ के लक्षण पूरे नहीं हैं। इनके कई तालों के नाम संगीत दर्पण से मिलते–जुलते हैं। इस ग्रंथ में 15 तालों के ठेके भी दिए गए हैं।

28 मात्रा के ब्रह्म ताल का ठेका इस प्रकार था –

1	0	1	0	0	1	0	0	0	1
तकधिम	किट	धिमिथों	तग	तग	धिमितग	नग	धधि	गण	तकथों
तथरिकि	धिमि	तथरिकि	थरि	थरि	धिमिथरि	कुकु	धधि	गण	तकथों
कुंदरिकि	कुक	कुंदरिकि	दां	दां	धिमिऽऽ	धिमि	धधि	गण	तकथों
झेझक	किड़	सगनग	तग	धिमि	तगतग	नग	धधि	गण	तकथों

यहाँ लघु में 4 मात्रा के अक्षर हैं और द्रुत में 2 मात्रा के।

निष्कर्ष

मध्ययुगीन ग्रंथों के अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि चूँकि मार्ग तालों में किसी प्रकार के परिवर्तन की गुंजाइश नहीं थी, अतः अधिकांश लेखकों ने रत्नाकर का ही अनुसरण किया, लेकिन फिर भी कुछ तत्वों के निरूपण का ढंग बदला तो कुछ के स्वरूप में भी अंतर आया क्योंकि हर संगीतकार की अपनी सोच होती है।

सन्दर्भ सूची

पं. शारंगदेव. (2000). संगीत रत्नाकर, अध्याय 5 व्याख्या और अनुवादकत्री चौधरी डॉ0 सुभद्रा, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

चौधरी, डॉ. सुभद्रा. (1984). भारतीय संगीत में ताल और रूप विधान, कृष्ण ब्रदर्स पब्लिकेशन्स, अजमेर।

जौहरी, डॉ. रेनू. (2019). ग्रंथ सारामृत, कनिष्क पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

सेन, डॉ. अरूण कुमारण (2005). भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल।

यमन, अशोक कुमार. (2015). संगीत रत्नावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चण्डीगढ़।

वशिष्ठ, पं. सत्यनारायण. (2009). ताल–मर्तण्ड, संगीत कार्यालय, हाथरस।